आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 1/अंक 2/दिसंबर 2021
Received: 26\11\2021; Accepted: 08\12\2021; Published: 24\12\2021

कहानी

तिपहिया

शाफिया फरहिन
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
पी.ई.एस पी यू कॉलेज,
मंड्या
E mail: shafiyafarheen01@gmail.com
Mob: 9035509186

शाफिया फरहिन **तिपहिया** ,आखर हिंदी पत्रिका, खंड 1/अंक 2/दिसंबर ,2021(174-179)

सरवर और वहीदा निम्न मध्यमवर्गीय परिवार से हैं। सरवर मजदूरी करता है और वहीदा को सिलाई का काम उतनी अच्छी तरह से नहीं आता इसलिए कभी-कभी पडोसियों के कपडे ठीक करने का काम करती है। दोनों की दूर की रिश्तेदारी थी और एक ही शहर में रहते थे तो बडों की सलाह के अनुसार दोनों का निकाह कर दिया गया था। वलीमा भी बडी धूम-धाम से ही किया गया। शादी के बाद मियाँ-बीवी में भी अच्छा प्रेम था। दोनों अधिक पढे-लिखे नहीं थे लेकिन व्यवहार-कुशल थे। वहीदा घर की बडी बहू थी इसलिए घर-परिवार की ज़िम्मेदारियाँ भी उस पर थीं और वह घर के किसी भी सदस्य को निराश नहीं करती थी।

शादी के एक सल में ही वहीदा ने एक बेटी को जन्म दिया। परिवार में नई पीढी का स्वागत बडे धूम-धाम से किया गया। उस दिन सरवर और उसकी माँ भी खुश थे। भले ही सरवर की माँ लडके की आस लगाए बैठी थी लेकिन लड़की होने पर भी उसने कोई ऐतराज़ नहीं जताया।

समय बीतता गया और सारा स्कूल भी जाने लगी। अब वहीदा अपनी दूसरी संतान को जन्म देने वाली थी। और दूसरी संतान भी लडकी ही हुई। इस बार सास ने अपनी नाराज़गी खुल कर ज़ाहिर की और कई महीनों तक वहीदा को घर नहीं बुलाया। वह अपने मायके में ही रही। सरवर के बहुत आग्रह करने पर बच्ची जब चार महीने की हुई तब उसे घर लाया गया। और रस्म की गई। सरवर के दोनों भाई अपनी भतीजियों को बहुत प्यार भी करते थे। अक्सर छोटा भाई सारा को स्कूल ले जाया करता था।

छोटी बेटी का नाम आएशा रखा गया। आएशा अब धीरे-धीरे घर वालों को पहचानने लगी थी। वह लेटे-लेटे घर में घूम रहे लोगों की ओर आँखें दौडाती और नज़दीक आने पर हंसती। कुछ ही महीनों में आएशा बैठना सीख गयी। सारा भी उसके साथ खूब खेलती। एक दिन वहीदा और सरवर का झगडा हो गया। सारा को स्कूल जाने में देरी हो रही थी। बिजली नहीं थी इसलिए वहीदा सिल में मसाला पीस रही थी। झोली में सो रही आएशा की नींद खुली और गर्मी की वजह से वह रोने लगी। बच्ची को चुप कराने के लिए उस दिन घर पर कोई नहीं था इसलिए वहीदा गई और झोली में से बच्ची को लिया और उसे चुप कराने लगी। इधर सारा को स्कूल जाने के लिए देर भी हो रही थी और पति से झगडा अभी खत्म नहीं हुआ था, वहीदा ने उसी गुस्से में आएशा को ज़मीन पर ज़ोर से पटक दिया। आएशा जो पहले से ही रो रही थी अब उसकी आवाज़ और तीखी हो गई और बच्ची बहुत चिल्ला-चिल्ला कर रोने लगी। पहले तो वहीदा को लगा कि अब ये गुस्से को पहचानने लगी है, इसलिए रो रही है फिर उसकी आवाज़ में आई तेज़ी के कारण आएशा को संभालने लगी।

जैसे ही बच्ची को उठाया तो लगा कि इसके शरीर का निचला हिस्सा ढल गया हो। वहीदा डर गई, बच्ची को गोद में उठा कर बाहर आई और पडोस के बच्चे से कहलवाकर सरवर को बुलाया। बच्ची की चीखें सुन कर वह भी डर गया और दोनों बच्ची को लेकर सीधा अस्पताल गए। डॉक्टर ने जांच की और एक्स-रे निकलवाया। देखा गया कि आएशा की रीढ की हड्डी टूट गयी है। एक क्षण के लिए ऐसा लगा कि वहीदा और सरवर को अपनी हड्डी टूटी हो। कुछ दिन अस्पताल में गुज़ारने के बाद आएशा को घर लाया गया और डॉक्टर ने बच्ची की अच्छी देख-भाल के लिए सलाह भी दी। घर पर आएशा का खूब खयाल रखा जाने लगा। सारा भी अब उसके साथ ज़्यादा खेलती नहीं। बस कहती.. "तुम जल्दी से बडी हो जाना, हम दोनों साथ में स्कूल जाएंगे...।"

दो-तीन महीनों में आएशा ठीक हो गई। हैरानी की बात थी कि वह चलने से पहले बोलना सीख रही थी। उसके चाचा चाहते थे कि वह भी सारा की तरह उनके साथ बाहर घूमने चले तो वे उसे धीरे-धीरे खडे होना सिखाते। एक दिन दोपहर का वक़्त था, घर के सभी लोग खाना खा रहे थे और आएशा ज़मीन पर बैठे खेल रही थी। सरवर ने यूँ ही आएशा को अपनी ओर बुलाया और वह उठ खडी हुई। सारा परिवार खुश हो कर उसकी ओर देख रहा था इतने में आएशा ने खुद से चलने की कोशिश की। दो ही कदम बढाए थे कि वह गिर पडी और रोने लगी। दादी ने कहा... "अरे... चलना सीखते वक़्त बच्चे तो गिरते ही हैं देखो अभी चुप हो जाएगी और फिर से चलने लगेगी।"

सरवर और वहीदा पिछली घटना नहीं भूले थे, उनको उसकी आवाज़ में वैसा ही दर्द सुनाई दिया जैसा उसकी कमर की हड्डी टूटने पर सुनाई दिया था। बच्ची चुप ही नहीं हो रही थी, खाना बीच में छोड कर

दोबारा अस्पताल दौडा गया। इस बार डॉक्टर ने बताया कि उसका एक पैर टूट गया है। मियाँ-बीवी दोबारा दुखी हुए, फिर से कुछ दिन अस्पताल में रह कर घर लाया गया। फिर से आएशा पट्टियों से बंधी रही।

ठीक होने के बाद अब आएशा भी चलने की हिम्मत नहीं किया करती। पडोस के बच्चे उसके साथ खेलने के लिए घर ही आया करते। आएशा कभी तोतली भाषा में बोलती ही नहीं, जो भी बोलना हो बिलकुल साफ और स्पष्ट बताया करती। इतनी छोटी बच्ची की इतनी साफ ज़ुबान से सब को हैरानी होती।

एक दिन पडोस के बच्चों के साथ आएशा खेल रही थी, बच्चों ने खेलने बुलाते हुए आएशा का हाथ खींचा और आएशा रोने लगी। वहीदा को यह पहचानने में देर नहीं हुई कि अब आएशा का हाथ टूट गया है, और हुआ भी वही। दोबारा अस्पताल का वनवास झेला गया। लेकिन इस बार हड्डियों के बार-बार टूटने को लेकर डॉक्टर ने बहुत सारे टेस्ट करवाने के लिए कहा। सरवर के पास पैसे कम थे इसलिए उसने कुछ दिन कि महूलत ली और पैसे जोडने में लग गया।

दस पंद्रह दिन में पैसे जमा हुए और एम.आर.आई के लिए ले जाया गया। आएशा छोटी थी इसलिए वहीदा को भी अंदर भेजा गया। अब सरवर बाहर बैठ सोच रहा था कि आखिर मेरी फूल सी बच्ची को हो क्या गया है। यही सोचते-सोचते उसे अपने मृत भाई मुहीद की याद आयी। वह सोचने लगा ... “कहीं आएशा भी...? मुहीद की तरह...? नहीं.... नहीं..., ऐसा नहीं हो सकता...।”

मुहीद सरवर का बड़ा भाई था जिसको मरे लग-भग बारह साल हो गए थे। मुहीद अत्यंत प्रतिभाशाली और होशियार था। घर का बड़ा बेटा लेकिन उस में एक कमी थी कि वह चल नहीं पाता था। उसके हाथ और पैर अंग्रेज़ी के ‘सी’ अक्षर की तरह मुडे हुए थे। उसके अब्बा इस्माईल ने कई डॉक्टरों को दिखाया था। लगता था कि मुहीद को पोलियो होगा लेकिन एक डॉक्टर ने बताया था कि मुहीद को ‘ओस्टोजेनेसिस इम्पर्फेक्टा’ नामक रोग है जो अनुवांशिक है और पंद्रह प्रतिशत रोगियों को यह रोग माता-पिता के द्वारा आता है जिसका कोई इलाज अभी तक नहीं मिल पाया है। बस कैल्शियम और विटामिन डी दिया जाता है ताकि हड्डियाँ कम टूटें। क्योंकि इन रोगियों में हड्डियों के फ्रैक्चर होने की समस्या बनी रहती है और मांसपेशियां भी कमज़ोर होने के कारण शरीर का विकास भी नहीं हो पाता।

मुहीद को यह बीमारी जन्म से ही थी। उसके पिता इस्माईल कबाडी का काम करते थे। गरीबी के बावजूद उन्होंने मुहीद को अच्छे से अच्छे डॉक्टर को दिखाया लेकिन कुछ हाथ न लगा और लोगों का उधार भी चढ गया। मुहीद के बाद उनके दो लडके और दो लडकियाँ और थीं जो बिलकुल स्वस्थ थीं।

मुहीद को स्कूल जाने, पढने लिखने का बहुत शौक था। इस्माईल अक्सर काम पर जाते हुए उसे साइकिल पर बिठा कर स्कूल छोड जाते और वापसी में साथ ले आते। अक्सर वापस आते हुए उन्हें देर हो जती

लेकिन उसे इस बात का कभी बुरा नहीं लगता। वह स्कूल के वातावरण में बहुत अच्छे से घुल मिल गया था। बहुत सारे दोस्त भी बना लिए थे। स्कूल के शिक्षक भी उस से बहुत प्रेम से पेश आते। वह अक्सर चुटकुले सुना कर सब को हंसाया करता। ऐसे ही उसने स्कूल से वापस घर जाने के लिए अब्बा को तकलीफ न हो यह सोच कर एक जुगाड बनाया। वह यह कि उसने बोरे को अपनी गाडी का रूप दे देता। जो रुपये इस्माईल उसे चॉकलेट खाने के लिए देते उसे वह अपने दोस्तों को दे देता और कहता कि वह उस बोरे पर बैठ जाएगा और उसे बोरे के दो कोने पकड कर खींचते हुए उसे घर पहुंचा दें। बच्चों के लिए यह एक खेल जैसा था लेकिन किसी तरह अपना भी मन बहला लिया करता। पुराने डिब्बे-कैन आदि से वह खिलौने भी बनाया करता और स्कूल के ही बच्चों को वह बेच कर अपनी पढाई के लिए पैसे इकट्ठा करता।

हाथ-पैर कमज़ोर होने के कारण वह अक्सर से निवाला नहीं उठा पाता। अम्मी-अब्बा अक्सर उसे खिलाया करते। अम्मी कभी-कभी थक जाती लेकिन उसके अब्बा कभी उसका काम करते हुए न थकते, न कभी कोई शिकायत करते। मुहीद के भाई बहन भी उस से अच्छा ही बरताव करते लेकिन माता-पिता द्वारा जब मुहीद की ज़्यादा देख-भाल देखते तो ईर्ष्या आ ही जाती। वे इसका बदला भी लिया करते। अक्सर मुहीद को अकेला छोड कर वे नानी के घर जाया करते। इसका भी मन होता लेकिन जाए कैसे? जब पैसे होते तब पडोस के बच्चों को पटा कर अपनी बोरिया गाडी पर सवार हो कर जाता। वरना अब्बा के घर लौटने तक ऐसे ही उदास बैठा रहता।

आयु के साथ-साथ मुहीद का वज़न भी बढता जा रहा था जिस के कारण उसके अब्बा को उसे गोद में उठाने में तकलीफ होती फिर भी वे उसे साइकिल पर उठा कर घुमाया करते। हाईस्कूल घर से काफी दूर था फिर भी वे किसी तरह उसे वक़्त पर पहुंचा ही देते।

इस्माईल का घर बहुत छोटा था और बाथरूम जाने के लिए एक सीढी थी। मुहीद वहाँ तक जा नहीं पाता था इसलिए उसकी माँ या बहन ही वहाँ तक ले जाया करते थे बचपन में तो यह सब ठीक था लेकिन बडे होते-होते उसे टॉयलेट जाने में भी शर्म महसूस होती। उसने यह उपाय सोचा कि खाना ही कम खाएगा तो बार-बार टॉयलेट भी नहीं जाना पडेगा। इसलिए अक्सर भूख न लगने का बहाना बनाया करता।

स्कूल की छुट्टियों में जहाँ सब बच्चे खेल कूद करते, मुहीद मैदान के किनारे बैठ कर उन्हें देख कर खुश हुआ करता। कभी किसी ने मुहीद को किसी चीज़ की शिकायत करते नहीं सुना था। अक्सर अपने अब्बा की मदद करने की उस में धुन सवार रहती।

दस वीं की परीक्षा के बाद उसे यक़ीन था कि वह अच्छे अंकों से पास भी हो जाएगा। इसलिए उसने सोचा कि आगे की पढाई के लिए वह खुद कमाएगा इसलिए उस ने अपने घर के आगे ही एक छोटी सी दुकान लगाई। इस्माईल भी अपने बेटे के विचारों से खुश थे कि वह अपनी ज़िंदगी खुद बनाना चाहता है। कुछ

ही दिनों में परीक्षा का नतीजा आ गया और सच में मुहीद ने अच्छे अंक प्राप्त किए थे। और इन दिनों में उसने दुकान के माध्यम से कॉलेज की फीस भी जमा कर ली थी।

विकलांग होते हुए भी अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए मुहीद को स्कूल की ओर से तिपहिया साइकिल देने की बात प्रिंसिपल ने मुहीद को बताई। मुहीद को इस बात से बेहद खुशी हुई अब वह सोच रहा था कि उसे बोरिया गाडी से छुटकारा मिलने वाला है। अब कॉलेज वह अकेला ही जा सकता है। वैसे भी उसे अब्बा के साथ स्कूल जाने में शर्म आती थी।

बुधवार का दिन था, प्रिंसिपल और दो शिक्षक उसके घर तिपहिया ले ही आए। घर में उनका सत्कार हुआ, मिठाई खिलाई गयी। वे लोग जैसे ही बाहर निकले मुहीद अपनी गाडी की ओर बढा। वह इस बात से खुश था कि गाडी पर चढने के लिए उसे किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं पडी। उसे खुश देख कर माँ की आँखों में आँसू आ गए। इस्माईल भी खुश थे कि आखिर मुहीद अब अकेले स्कूल जाने लायक बन गया। वैसे भी अब उसका वज़न बढ गया था तो साइकिल पर बैठाने के लिए किसी न किसी की मदद की आवश्यकता पडती ही थी। कभी कभी इस बात के लिए उसे अपने भाई बहनों के ताने भी सुनने पडते थे।

कॉलेज खुलने में अभी बहुत दिन थे, मुहीद अपनी तिपहिया सवारी की खुशी में झूम रहा था। उसे अगले ही दिन नानी के घर जाने की इच्छा हुई। आखिर वह अपनी खुशी जताना भी तो चाहता था। अगली सुबह नहा-धो कर तैयार हुआ और अम्मी से कहा कि वह नानी के घर जा रहा है। आज पहली बार वह बिना किसी की मदद के, अकेले बाहर जा रहा है। वह तिपहिये पर सवार हुआ और नानी के घर की ओर निकला। गली में खेल रहे बच्चों ने उसकी गाडी को घेर लिया और पीछे से धक्का देने लगे। मुहीद को गाडी संभालने में मुश्किल हो रही थी। वह बच्चों को मना करता लेकिन वे शरारती उसकी बात सुन भी नहीं रहे थे। आखिर किसी तरह नानी के घर पहुंचने में वह सफल रहा।

मुहीद को खुश देख कर नानी भी खुश हुई। आज वहाँ उसी की पसंद का खाना बनाया गया और तिपहिया की खुशी में खीर भी बनाई गई। आज मुहीद को अपने वज़न बढने की चिंता भी नहीं थी इसलिए उसने पेट भर के खाया। शाम होने लगी तो मुहीद भी वापस घर जाने के लिए तैयार हुआ। नानी के घर में आने के बावजूद उस दिन वह अपनी गाडी से चिपका ही रहा। बार-बार गाडी को पोंछता। उस पर धूल का एक कण भी बैठे, उसे मंज़ूर नहीं था। नानी कहती "अब बस भी कर...!" मगर वह नहीं सुनता।

मुहीद अब घर चलने लगा, नानी ने अपनी बेटी-दामाद के लिए डिब्बे में खीर दे दी। वह जैसे ही गडी लेकर सडक पर निकला, शरारती बच्चे फिर से उसके पीछे लग गए। सुबह के मुकाबले वह ज़्यादा शरारती लग रहे थे। जैसे ही उन्होंने गाडी को ढकेलना शुरु किया, मुहीद भी डर गया। वे उसे ढकेलते हुए घर के दूसरी ओर ले जाने लगे। वह चिल्लाया पर बच्चे अपनी ही मौज में थे। उन्होंने अपने मोहल्ले में तिपहिया गाडी पहली बार देखी थी। इसलिए वे उसे छोडना नहीं चाहते थे। गाडी मुहीद की पकड से बाहर जा रही थी और वह उसे

संभाल नहीं पा रहा था ज़ाहिर है, हाथ भी तो मुडे हुए हैं। लेकिन वे बच्चे उसे समझ ही नहीं पा रहे थे। वे उसे एक दम तेज़ी से ढकेले जा रहे थे और मुहीद "रुको..... रुको..." चिल्लाए जा रहा था। आखिर एक स्पीड ब्रेकर आया और गाडी उछल कर सीधे नाली में जा गिरी। वहीं पर रखे एक पत्थर से मुहीद का सर टकरा गया और खून बहने लगा। तब वे बच्चे रुके और खून देखते ही उसकी नानी के घर की ओर दौडे।

एक ने बताया "अभी आप के घर जो लंगडा आया था न...! वह गिर गया है और खून आ रहा है।"

वह डर के मारे दौडी और पहुंची तो देखा कि काफी खून बह गया है और वह बेहोश है। इतने में कोई बच्चा रिक्शा ले आया और उसे रिक्शे में डाल कर सीधे अस्पताल ले गए। एमेर्जेंसी में दाखिल किया गया। कुछ ही देर में परिवार के बाकी सदस्य भी जमा हुए। एक दो घंटे में डॉक्टर ने मुहीद को मृत घोषित कर दिया। पोस्ट्मॉर्टम के बाद अगले दिन उसका शव घर वालों को दिया गया।

मुहीद की अम्मी को यक़ीन नहीं हो रहा था। अब्बा सदमे में रहते हुए भी कफन-दफन का इंतेज़ाम कर रहे थे। कोई मुहीद की तारीफ करता तो कोई कहता कि "अच्छा हुआ बेचारा मर गया, वैसे भी बाप पर बोझ बना बैठा था।"

दिन बीते और मुहीद की यादें धुंधलाने लगीं लेकिन इस्माईल अपने बेटे को पूरी तरह भूल नहीं पाए थे। साइकिल चलाते हुए उन्हें अक्सर मुहीद के पीछे बैठने का अनुभव हुआ करता। एक दिन सुबह काम पर जाते हुए साइकिल चलाते-चलाते इस्माईल पीछे मुडे ही थे कि बेकाबू बस ने उन्हें कुचल दिया और मौके पर ही वे मर गए।

आज इस बात को 12 साल बीत गए हैं और सरवर को अपने भाई की याद आई है। आएशा अभी भी बाहर नहीं आयी थी। सरवर पसीने से तरबतर हो रहा था। इतने में वहीदा और आएशा बाहर आए। सरवर को घबराया हुआ देख वहीदा डर गई। पूछने लगी कि "तबीयत तो ठीक है?... पैसे नहीं हैं क्या...?" सरवर ने कोई जवाब नहीं दिया और आएशा को उसकी गोद से छीन लिया।

अगले दिन रिपोर्ट आने के बाद डॉक्टर ने बताया कि आएशा को ओस्टोजेनेसिस इम्पर्फेक्टा है।

****